

धान फसल के चूसक विनाशकारी कीट एवं उनका प्रबंधन

डॉ. पी.सी.रथ

चावल भारत की सबसे प्रमुख फसल होने के साथ-साथ भारत में विनाशकारी कीटों के बदलते स्वरूप का सबसे अच्छा उदाहरण है। भारत में हरित क्रांति के बाद, इस फसल में लगने वाले नाशकजीवों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है तथा उनका फैलाव, स्थिति एवं उनके प्रकार में भी परिवर्तन हुआ है। धान के प्रमुख विनाशकारी कीटों में, पीला तना छेदक का प्रकोप सबसे अधिक है तथा चूसक कीट भूरा पौध माहू, सफेदपीठ वाला पौध माहू, हरा पत्ता माहू, मीलीबग एवं गंधीबग कीट भी फसल को अत्यधिक नुकसान पहुंचाते हैं।

1. भूरा पौध माहू

क्षति: यह कीट धान पौधों से निरंतर रस एवं पोषकतत्व चूसता है। इसके अत्यधिक प्रकोप के कारण पौधे का रंग पीला हो जाता है और पौधा मर जाता है। फसल क्षति के इस लक्षण को हॉपर बर्न कहते हैं। प्रकोप होने पर धान के खेत के केंद्र में एक गोलाकार धब्बा दिखाई देता है।



नियंत्रण: जब इनकी संख्या 10 कीट प्रति पूंजा हो जाए तब क्लोरोपाइरिफास 20 ईसी 2.5 लीटर प्रति हेक्टर या क्वीनालफास 25 ईसी 2 लीटर प्रति हेक्टर या इमिडाक्लोप्रिड 200 एसएल 0.5 लीटर प्रति हेक्टर की दर पर 500 लीटर पानी में मिलाकर पर्णोप छिड़काव किया जा सकता है या कार्बोफ्यूरन 3 जी 33 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर पर प्रयोग किया जा सकता है।



2. सफेदपीठ वाला पौध माहू

क्षति: वयस्क कीट एवं इनके बच्चे दोनों समान रूप से पौधों के फ्लोएम रस को चूस कर क्षति पहुंचाते हैं जिससे



पौधों की ओज कम हो जाती है, पौध वृद्धि घटती है, इनका रंग पीला हो जाता है, विलंब में दौजियां निकलती हैं तथा दाना की बनावट में भी विलंब होता है। कीटों के इस प्रकार के चूसने से कज्जली फफूंद होता है। इन कीटों के अत्यधिक प्रकोप से फसल में हॉपर बर्न होता है। भूरा पौध माहू से खेत में गोलाकार धब्बा बनता है जबकि सफेदपीठ वाला पौध माहू के प्रकोप से खेत में असामान्य व अनियमित आकार के धब्बे बनते हैं।

नियंत्रण: जब इनकी संख्या 10 कीट प्रति पूंजा हो जाए तब क्लोरोपाइरिफास 20 ईसी 2.5 लीटर प्रति हेक्टर या इमिडाक्लोप्रिड 200 एसएल 0.5 लीटर प्रति हेक्टर की दर पर या कार्बारील 50 डब्ल्यूपी 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर पर, एसीफेट 75 एसपी 0.625 किलोग्राम प्रति हेक्टर या कार्बोफ्यूरन 3 जी 33 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर पर प्रयोग किया जा सकता है।।

3. हरा पत्ता माहू

क्षति: वयस्क कीट एवं इसके बच्चे दोनों पौधों के कोशिकाओं को चूसते हैं जिससे कज्जली फफूंद होता है।



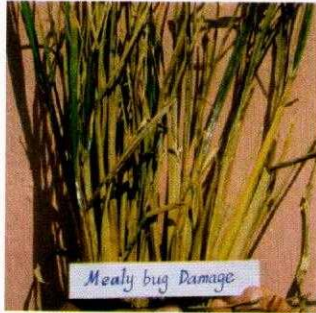
इन कीटों के अत्यधिक प्रकोप से फसल का अपक्षय होता है तथा फसल पूरी तरह मर जाती है। यह कीट धान टुंग्रो रोग जैसे विषाणुजनित रोग का प्रमुख रोगवाहक है जिससे पौध की वृद्धि घटती है, इनका रंग पीला हो जाता है तथा अंत में पौधे सूख जाते हैं।

नियंत्रण: वृद्धि अवस्था के दौरान जब कीटों की संख्या 10 कीट प्रति पूंजा हो जाए या फूल लगने के समय जब 20 कीट प्रति पूंजा हो जाए तब दानेदार कीटनाशक थियोसाइक्लाम हाइड्रोजन ऑक्सोलेट (एवीसेक्ट 5 जी) 40 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर पर प्रयोग किया जा सकता है या एमआईपीसी (मिपसीन 50 डब्ल्यूपी)

1 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टर की दर पर छिड़काव किया जा सकता है या कार्बोफथूरन 3 जी 33 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर पर प्रयोग किया जा सकता है।।

4. राइस मीली बग

क्षति: मीली बग का वयस्क कीट एवं इसके बच्चे दोनों पौधों के पत्तों के आच्छद में छिपकर रस चूसते हैं जिससे पौध की वृद्धि घटती है एवं पत्तों का रंग पीला हो जाता है। पत्ते अंदर की तरफ गोल आकार में मुड़ जाते हैं और धब्बे बन जाते हैं। इससे या तो पौध मर जाते हैं या विकृत बालियां बनती हैं जिसमें शुष्क दाना होता है। इस प्रकार की क्षति को तमिलनाडु में सुराई रोग के नाम से जाना जाता है।



नियंत्रण: खेत से आक्रांत पौधों को हटा कर नष्ट कर देना चाहिए। आक्रांत स्थानों पर केवल कार्बोफथूरन 3 जी 33 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर पर या फास्फामाइडल 85 ईसी 0.6 लीटर पानी प्रति हेक्टर दर पर प्रयोग किया जा सकता है।

5. राइसबग/गंधी बग

क्षति: कीटों द्वारा दानों को चूसने से दाना भरण अधूरा होता है या आंशिक रूप से भरता है या भूसीदार दाना बनता है जिससे कवक एवं जीवाणु संक्रमण होता है और दानों का रंग विवर्ण हो जाता है।



नियंत्रण: जब कीटों की संख्या 5 कीट प्रति पूंजा हो जाए तब मिथाइल पाराथियन 5 प्रतिशत दर पर पौधों पर छिड़काव किया जा सकता है या क्लोरोपाइरिफास 5 प्रतिशत 25 किलोग्राम प्रति हेक्टर दर से प्रयोग किया जा सकता है। दूध बनने की आरंभिक अवस्था में क्लोरोपाइरिफास 20 ईसी 2.5 लीटर प्रति हेक्टर या ऑक्सीडीमेटन मिथाइल 20 ईसी 2.5 लीटर प्रति हेक्टर छिड़काव किया जा सकता है किंतु इस अवस्था में छिड़काव नहीं करने की सलाह दी जाती है क्योंकि दाने कीटनाशकों को अवशोषण करते हैं।

(प्रधान वैज्ञानिक, एनआरआरआई,
कटक, ओडिशा)